शेख़ फ़रीद - सबद २४

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥
अज फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओम ॥२०॥

सार: हमारा दृष्टिकोण हमें गहरे आंतरिक रूप से बदल सकता है। जब हम जिज्ञासा और खुलेपन के साथ अपरिचित रास्तों की खोज करते हैं और विविधता को अपनाते हैं तब हमारा मन ग्रहणशील, हल्का और बड़ा बनता है। लेकिन हमारी पूर्वधारणाएं, निर्णय और जड़ सोच हमें सीमित कर सकते हैं। यह आंतरिक बाधाएँ हमारी धारणा को सीमित करती हैं, हमें परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी बनाती हैं और हमारे भीतर दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता में बाधा डालती हैं।

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥
फ़रीद कहते हैं कि इतने पतले नाज़ुक पैरों के साथ मैं मैदानों और पहाड़ों को पार करता रहा। यह उस निर्मल, सहज और अनारक्षित मन की ओर संकेत है जो बिना पूर्वाग्रह, विभिन्न विचारों और अनुभवों को आत्मसात करता है।

अज फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओम ॥२०॥
पर अब पानी भरने वाला घड़ा भी सौ कोस दूर लगता है, छवि में बदलाव समय के साथ मानसिकता की बाधाओं को दर्शाता है। (२०)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद विभिन्न दृश्यों की सहज कल्पना के माध्यम से जीवन पर एक कोमल चिंतन प्रस्तुत करते हैं जहां ऐसे अपरंपरागत मन की शक्ति का स्मरण कराते हैं जो आध्यात्म की खोज में विविध विचारों को सहजता से आत्मसात कर सकता है। जल पहुँचाने वाले के दूर होने का रूपक प्रतीक है उस बद्ध मानसिकता के बोझ का जिसने पहले स्वतंत्रता का आनंद लिया था। यह चिंतन सार्वभौमिक

जागरूकता को बढ़ावा देने वाली व्यावहारिकता के विपरीत कट्टरपंथ और कठोर सोच की सीमाओं को उजागर करता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: **OnenessInDiversity.com**

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com